षष्ठ अध्याय

*** उपसंहार ***

साहित्य संसार का दपर्ण है । जिस दृष्टि से संसार की तरफ हम देखते हैं उसी तरह दुनिया दिखायी देती हैं । सामान्य जन और साहित्यकार की वैचारिक दृष्टि में बहुत अंतर होता है । साहित्यकार संसार में रहकर अपने साहित्य के द्वारा संसार की दुर्बलताओं को मिटाना चाहते हैं । हर साहित्यकार अपने विचारों को अलग-अलग साहित्यिक रुपों में व्यक्त करके उन्हें एक खास रुप प्रदान करता है । इसीलिए उन रुपों का भी अध्ययन करना जरुरी है ।

विभिन्न अंग मिलकर शरीर का निर्माण होता है । सब अंगों में आत्मा का संचार होने पर शरीर का जन्म होता है । प्रत्येक शरीर में समान अंग होकर भी उनके रुप अलग-अलग होते हैं । यही स्थिति साहित्य की है । साहित्य के विविध रुपों का भिन्न-भिन्न सौंदर्य है ।

काव्य का विकास विविध अंगों पर आधारित होता है । एक अंग के बिना काव्य आत्मा रहित शरीर के समान होता है । कवि अपने विचारों को मधुर एवं सुंदर रुपों में साकार कर देता है । तभी सच्चे अर्थों में कवि के विचारों को एक रुप मिल जाता है ।

कवि अपनी अनुभूतियों के साथ अन्य आख्यानों का स्वीकार करता है तब प्रबंध काव्य का निर्माण होता है । प्रबंध काव्य में लोक प्रचलित विशाल कथा का अंकन होता हैं । प्रबंध काव्य के दो रुप है – महाकाव्य और खंडकाव्य । महाकाव्य में किसी महापुरुष के संपूर्ण जीवन का चित्रण होता हैतो खंडकाव्य में जीवन की एक ही प्रमुख घटनापर प्रकाश डाला जाता है । खंडकाव्य का कलेवर छोटा होता है लेकिन प्रभावात्मकता और हृदयस्पर्शिता के कारण लोकप्रिय है । आज कल महाकाव्य का निर्माण कम हो रहा है, इसी कारण इसकी रुचि भी कम हो रही हैं ।

काव्य कवि की अभिव्यक्ति है, जिसमें कल्पना और सत्य दोनों अंतर्मुक्त रहते हैं । लेकिन

वहीं काव्य श्रेष्ठ है जो आनंद के साथ-साथ हमें महान उपदेश भी देता है । इस दृष्टि से देखने पर 'भस्मांकुर' एक श्रेष्ट काव्य सिध्द होता है । उसमें हमारी ज्ञानवृध्दि करने की एवं जन-जागृति करने की शक्ति है ।

हर मानव अपनी वंशपरंपरा एवं देश, काल, वातावरण से प्रभावित होता है । इसका अपवाद साहित्यकार कैसे हो सकता है । साहित्य में उनके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती हैं । इसीलिए किसी कवि या उसकी कृतियों का अध्ययन करने से पहले उनकी जीवनी से परिचित होना जरुरी हैं ।

नागार्जुनजी का असली नाम प. वैद्यनाथ मिश्र है । उन्हें लोग प्यार से "बाबा" कहते हैं । नागार्जुनजी का स्वभाव सरल, सादा और खुला था । सरलता के साथ वज्रकठोर दृढता भी है । रुढिवादी पिता एवं बचपन में माताजी का देहांत होने के कारण जीवन संघर्ष में कडा दुःख भोगा । बचपन में ही उनके अंदर का रचनाकार जागृत हुआ था । कठिन प्रसंगों का सामना करते वक्त उन्होंने अपने अंदर के रचनाकार को मरने नहीं दिया ।

कवि के व्यक्तित्व पर स्वामी सहजानंदजी और साहित्यकार पर निराला की गहरी छाप पडी है । विद्रोही स्वभाव को उन्होंने रचना में रुपांतरित किया ।

नागार्जुनजी संस्कृत, मैथिली और हिंदी भाषा के संपन्न साहित्यकार है । उन्होंने काव्य, खंडकाव्य, उपन्यास, कथासाहित्य, बालसाहित्य, आलोचना और अनुवाद आदि विधाओं का लेखन किया है ।

नवयुवक देश के आधारस्तंभ है । लेकिन आज का शासक वर्ग इस स्तंभ को कमजोर बना रहा है । युवको कों झूठे वादे करके गलत रास्तों पे ले जा रहे हैं । कविने नेताओं के गलत विचारों का खंडन करके अपने विचारों के माध्यम से नवयुवकों को अपनी और देश की उन्नति की ओर अग्रेसर किया है ।

नागार्जुन ने अपने साहित्य के द्वारा जन–जागृति करके जीवन समस्या को हल करने की कोशिश की है । नागार्जन जैसे अपवादात्मक कवि ही अपने जीवन और कर्म का लक्ष्य– समाजहित एवं राष्ट्रोध्दार निश्चित करते हैं । समाज की दुर्बलताओं को मिटाकर एक शाश्वत शांति चाहते हैं । नागार्जुन एकमात्र ऐसे कवि है– जो अपने साहित्य का केंद्रबिंदु सामान्य मानव को बनाते हैं । उन्होंने जनता के जीवन से हटकर अलग ढंग का साहित्य कभी नहीं बनाया । नागार्जुन ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतवासियों को देशभक्ति और राष्ट्रोध्दार की ओर आकृष्ट करने का प्रयास किया है ।

जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोन रखकर उन्होंने उन दु:खी जनता के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है– जो जुल्म की चक्की में पीसे जा रहे हैं । सचमुच कवि नागार्जुन एक प्रगतिशील कवि है, जो हिंदी साहित्य के लिए एक अनमोल देन है ।

बचपन से ही वे जीवन के कटु अनुभवों से परिचित है । अपने पिता के साथ उन्होंने यायावरी शुरु की थी, यही सिलसिला संपूर्ण जीवन में चल रहा है । घुमक्कड जीवन में वे देश के कोने कोने में गये । दु:खी जनता के गम में शरिक होकर उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करके उनपर जुल्म ढानेवाले उन खुदगर्जी, अत्याचारियों को विरोध करके उनपर तिखे व्यंग्य का प्रहार किया ।

वैसे तो हिंदी में व्यंग्य काव्य की परंपरा बहुत प्राचीन है । इस प्रवृत्ति का समुचित विकास सर्व प्रथम कबीर आदि संतो की वाणी में मिलता है । आधुनिक काव्य में तो व्यंग्य की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर विकसित होती गयी । आज के हिंदी साहित्य में नागार्जुन एक महान व्यंग्यकार के रुप में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । नागार्जुन का व्यंग्य काव्य उनकी जीवन अनुभूति का सच्चा प्रतीक है इसी कारण उनके व्यंग्य यथार्थ और सशक्त है । समाज, धर्म, राजनीति, साहित्य और जीवन में जहाँ कहीं भी उन्हें विषमता, अन्याय, अत्याचार और असंगति दिखायी दी, वहीं पर उन्होंने व्यंग्य का प्रहार किया है । साहित्य और सामाजिक परिस्थिति ने नागार्जुन को सफल व्यंग्यकार बनाया । उन्होंने जितनी व्यंग्यात्मक कविताएँ लिखी हैं, उतनी अन्य साहित्यकारों ने नहीं लिखी हैं । उनके

संपूर्ण साहित्य में पद–पद पर व्यंग्य बिखरा पडा है । कहीं–कहीं उनके विचारों का खंडन होता दिखायी देता है, मगर नागार्जुन एक ऐसे कवि है – जिन्होंने आँखो से जो समाज का खुला नंगापन और अधोगति देखी हैं उसका यथार्थ चित्र खिंचकर हिंदी साहित्य में अपना अलगा–सा स्थान बनाया है ।

जब तक इस संसार में गरीबी भूखमरी, शोषण, अन्याय, अत्याचार, पाखंड और अंधश्रध्दा विद्यमान है तब तक नागार्जुन जैसा कवि कभी भी आँखे मूँदकर चुपचाप नहीं बैठ सकता, बल्कि उन्होंने उनके खिलाफ अपने साहित्य के माध्यम से आवाज उठायी हैं । हम संक्षेप में कह सकते हैं कि नागार्जुनजी ने सत्ताधारी, साम्राज्यवादी, पूँजीवादी सत्तात्मक तंत्र के साथ कभी–भी समझौता नहीं किया है, बल्कि उनके बूरे विचारों का एवं अंदर की हीन भावना का समूल नष्ट करने की कोशिश की है ।

नागार्जुन मूल रुप से मानवता का पुजारी है । उनका मानवतावादी दृष्टिकोन बडा ही प्रबल है । उनका संपूर्ण साहित्य जन–जीवन के चित्रण से भरा हुआ है । उन्होंने ज्यादातर बहुजनों के हित की चिंता की है । इसीसे स्पष्ट होता है कि वे समग्र विश्व से प्रेम करते हैं । मानव–कल्याण की ओर उनका ध्यान रहता है । दु:खी जनता को देखकर वे द्रवित भी होते हैं और क्रोधित भी । विश्व–वंधुत्व की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने 'भस्मांकुर' काव्य की रचना की हैं ।

नागार्जुन का 'भस्मांकुर' एक आख्यान खंडकाव्य है । इस रचना का विषय पुराना है, लेकिन इसे नागार्जुन ने नूतन आदर्श के साथ उपस्थित किया है । हम कह सकते हैं कि पौराणिक आख्यान होकर भी इसकी आत्मा आधुनिक युग की है । इस काव्य कृति की रचना करते समय कवि ने खंडकाव्य के उन सभी तत्वों, नियमों का पालन किया है, जिसकी बुनियाद पर एक अच्छा प्रबल खंडकाव्य बनता है । कथावस्तु में सजीवता लाने के लिये कवि ने कहीं–कहीं नियमों में कुछ बदलाव किया है । यह परिवर्तन उन्होंने जानबूझकर नहीं किया है, आज की जरुरत के अनुसार 'भस्मांकुर' की निर्मिती की है । इस कृति के माध्यम से कवि ने पुरानी विचार श्रृंखला में बदल करके आज के सुधारवादी आधुनिक विचारों का प्रसार किया है । इस महान लक्ष्य को चित्रित करके कवि ने अद्‌भूत सफलता पायी हैं ।

'भस्मांकुर' काव्य में राजनीतिक, सामाजिक तथा पारिवारीक समस्याओं के संदर्भ में पुरानी मान्यताओं और नयी मान्यताओं के संघर्ष को व्यक्त करने के लिए कवि ने विशिष्ट ढंग को अपनाया है। उन्होंने पुरानी कथा के माध्यम से पुरानी मान्यताओं को व्यक्त करके उससे होनेवाली बर्बादी की ओर संकेत किया है । पौराणिक मूल्यों का आधुनिकीकरण करना ही 'भस्मांकुर' का मूल लक्ष्य है । 'कुमारसंभव' के 'मदन–दहन' वाले प्रसंग को लेकर कवि ने 'भस्मांकुर' काव्य के द्वारा सामाजिक विषमता का चित्रण करके उसे दूर करने का प्रयास किया है । साथ ही साथ वर्तमान जीवन में व्याप्त व्यवस्था के कुचक्र के नीचे सामान्य जन किस प्रकार घसीट रहा है, उसका सुस्पष्ट तथा सजीव चित्रण 'भस्मांकुर' के माध्यम से किया है ।

नागार्जुन के 'भस्मांकुर' काव्य के चरित्र–यथार्थ जीवन के चित्र है । उन्हें कवि ने मानवता की धरातल पर पेश किया है । ये पात्र पौराणिक होकर भी वर्तमान जन–जीवन के प्रतिनिधि लगते हैं। उन पात्रों के माध्यम से कवि ने मानवता का संदेश फैलाया है ।

'भस्मांकुर' के नारी पात्र अलौकिक है । लेकिन नागार्जुन ने इन पात्रों को मानवी रुप में चित्रित किया है । उनका नारी विषयक दृष्टिकोन आदर्शवादी है । वे भारतीय पतिव्रत धर्म के समर्थक है । लेकिन वे यह नहीं चाहते कि पति–पत्नी की उपेक्षा करें या उसे कम सम्मान दे । उन्होंने नारी के विशाल हृदय को जाना है । इसीलिए वे कहते हैं कि –

"शिशु समान होती हैं नारी–जाति
मृदुमति, तरल स्वभाव, रुप–रस–गंध–
शब्द–स्पर्श के प्रति अर्पित आप्राण ।
पी जाती यह हालाहल चुपचाप
कंठ नहीं होते हैं इनके नील
खंडित होने देती अपना शील
चुकता करती भावुकता का मूल्य
तन–मन–धन सब–कुछ देती हैं झोंक..." ।

नारी को पत्नी एवं प्रेयसी के रुप में चित्रित करके उनका स्वाभिमान, औदात्य त्याग, लोकहित एवं विनोदप्रियता का यथार्थ चित्रण किया है ।

'भस्मांकुर' काव्य में आधुनिक प्रगतिशील विचारों के दर्शन होते हैं । मालिकशाही, अन्याय, अत्याचार का विरोध, रुढियों, अंधविश्वासों एवं पाखंडियों का विरोध, विज्ञान, मानव-कल्याण नारी भावना, सहयोग की भावना, आशावादी भावना, काम का महत्त्व और दुःखी जनता के प्रति सहानुभूति आदि विशेषताएँ इस काव्य में विद्यमान है । यहीं वैचारिकता कथानक और चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है ।

काव्यांतर्गत सौंदर्य को देखने के लिए हमें उसमें निहित भावों को देखना पडता है तथा उसकी कल्पना तथा सहानुभूति की व्याख्यात्मक आलोचना करनी पडती हैं । भावपक्ष और कलापक्ष के संयोग से काव्य-सौंदर्य उभरता है । जिस काव्य-कृति में इन दोनों पक्षों का समान रुप से चित्रण होता है, वही कृति महान होती हैं । 'भस्मांकुर' इस दृष्टि से सफल काव्य है ।

'भस्मांकुर' काव्य की कथा पौराणिक है लेकिन इसे नये संदर्भो के साथ प्रस्तुत किया है । नागार्जुन एक भावुक कवि हैं । उन्होंने अपने विचारोंको अलग ढंग से प्रस्तुत किया है । उन्होंने 'भस्मांकुर' का कथासंगठन सर्गरहित बनाया है, जो युगानुरुप है ।

नागार्जुन ने 'भस्मांकुर' काव्य में प्रकृति-सुंदरी की विविध सौंदर्यपूर्ण झाँकिया अंकित की है । हम तो कह सकते हैं कि 'भस्मांकुर' काव्य का चित्रण प्रकृति के प्रागंण में करके कविने संपूर्ण काव्य को प्रकृति-चित्रण से ओत-प्रोत भरा है ।

'भस्मांकुर' में सजीवता लाने के लिए और आनंद की उत्पत्ति के लिए रस को विशेष महत्त्व दिया है । 'भस्मांकुर' काव्य में श्रृंगार रस की प्रधानता है । श्रृंगार रस के अलावा हास्य, करुण, भयानक, रौद्र और बीभत्स आदि रसों का भी प्रसंगानुसार सफल प्रयोग कविने किया है ।

भावनाओं तथा विचारों के आदान-प्रदान का सर्वोत्तम साधन 'भाषा' है । काव्य में कवि के

भावों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही होती हैं । "भस्मांकुर" खडी-बोली में लिखा काव्य-ग्रंथ है । सरल जनभाषा का प्रयोग करके 'भस्मांकुर' को सर्वग्राह्य बनाया है । कवि की शब्दयोजना बडी उच्च कोटि की बनी है । कहावतें और मुहावरों के प्रयोग से 'भस्मांकुर' में गहनता एवं रमणीयता की सृष्टि हुई है । खडी-बोली के साथ ही साथ उर्दु, फारसी और संस्कृत भाषा का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है । हम तो कह सकते हैं कि नागार्जुनजी ने 'भस्मांकुर' काव्य में भावानुकूल भाषा और भाषानुसार शब्दचयन किया है ।

भाषा के तीन गुण है – माधुर्य, ओज, और प्रसाद । "भस्मांकुर" में ये तीन गुण सर्वत्र प्राप्त होते हैं । नागार्जुन ने इन गुणों के द्वारा कृति को आरंभ से लेकर अंत तक सरल बनाया रखा है ।

भाषा और शैली का घनिष्ठ संबंध है । रचनाकार अपने विचारों को शैली के माध्यम से व्यक्त करता है । नागार्जुन ने विषय के अनुकूल शैली का प्रयोग किया है । "भस्मांकुर" की कथा का विकास वर्णनात्मक, नाटकीय तथा आत्मविश्लेषणात्मक शैलियों में हुआ है ।

नागार्जुन ने लाक्षणिक प्रयोग के द्वारा उवित-वैचित्र्य को निर्माण किया है । "भस्मांकुर" में कतिपय प्रतीकों और बिबों का प्रयोग करके काव्य को सुंदर एवं सजीव बनाया है ।

"भस्मांकुर" में शब्दालंकार, अर्थालंकार, और पाश्चात्य अलंकारों की योजना भावानुकूल तथा प्रसंगानुकूल बनी हैं । भाषा प्रवाह के साथ वक्रोक्ति, विप्सा, पुनरुवित प्रकाश, उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, संदेह, ध्वन्यर्थव्यंजना, विशेषण-विपर्यय और मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग सहज एवं स्वाभाविक ढंग से हुआ है । इन्हीं अलंकारों ने नागार्जुनजी के भावों को द्विगुणित कर दिया है ।

"बरवै" छंद में संपूर्ण "भस्मांकुर" काव्य का प्रणयन हुआ है । नागार्जुनजीने अपनी रुचि के अनुसार इस पुराने छंद में परिवर्तन करके इसे नया रुप दिया है । 19 मात्राओं के इस "बरवै" छंद के प्रयोग से 'भस्मांकुर' काव्य आकर्षक, मनोरंजक एवं सुंदर बना है ।

नागार्जुन का व्यक्तित्व गरिमामय और दृष्टिकोन व्यापक है । "भस्मांकुर" काव्य पर उनके इस व्यक्तित्व की छाप पडी हैं । युगीन परिस्थितियोंसे प्रभावित होकर प्रस्तुत काव्य की निर्मिती की हैं । "भस्मांकुर" की कथावस्तु में आधुनिक प्रगतिशील विचारधारा का समावेश करके उन्हें नये अर्थो में प्रस्तुत किया है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि "भस्मांकुर" काव्य में युग का प्रतिबिंब है ।

नागार्जुन एक जनकवि हैं । मनुष्य के जीवन को सुंदर, उन्नत और मंगलमय बनाने का उनका दृढ संकल्प है । वे मनुष्य को मनुष्य के रुप में देखना चाहते हैं । तारकासुर जैसे भयानक संकटों का खात्मा करके सुखी संसार की निर्मिती करना चाहते हैं ।

वर्तमान जनजीवन की समस्या को पौराणिक कथा के द्वारा सुलझाने का सुंदर प्रयास "भस्मांकुर" काव्य में किया है । सुर-समाज की समस्या के रुप में वर्तमान समाज की दयनीय स्थिति का अंकन किया है ।

नागार्जुन ने मदन को एक समाज-सुधारक के रुप में चित्रित करके उनके कार्यद्वारा भारतवासियों के दिल में समाजप्रेम एवं देश प्रेम का बीज बोना चाहते हैं । समाज में मदन जैसे सुधारक निर्माण करके सुंदर विश्व की निर्मिती करने का प्रयास 'भस्मांकुर' में किया है ।

नारी के अंतर्मन की विवशता, घुटन, तडप और उसकी चाहत का यथार्थ चित्र "भस्मांकुर" में खिंचा है । वे नारी को गुलामी की जंजिरों से मुक्त करना चाहते हैं । नारी का स्वाभिमान और उसके अद्‌भूत त्याग का परिचय करवाकर उसे समाज में ऊँचा दर्जा देने का संदेश दिया है ।

पार्वती के चरित्र को देवपुत्री के रुप में नहीं बल्कि पर्वत-पुत्री के रुप में चित्रित करके उन्हें आधुनिक कुमारी कन्या का रुप प्रदान किया है । पार्वती के स्वप्न प्रसंगों का चित्रण कवि की मौलिक उद्‌भावना है, जो युगदृष्टि से मेल खाता है । स्वप्न प्रसंगों के द्वारा कवि ने स्वप्नों की दुनिया और शाश्वत दुनिया के बीच का फर्क स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

"काम" के बीना जीव की पुनः सृष्टि होना असंभव है । संपूर्ण सृष्टि का विकास "काम" प्रक्रिया पर आधारित है । नागार्जुन मानव प्रेमी कवि है । उन्होंने मानव-जाति की वेली को हरीभरी रखने के लिए "काम" को विशेष महत्त्व दिया है ।

नागार्जुन विज्ञान का इस्तेमाल मानव कल्याण के लिए करना चाहते हैं । विज्ञान का गलत इस्तेमाल करने से विश्व की शांति नष्ट हो सकती है । उन्नत और प्रगतिशील राष्ट्र की निर्मिती करने के लिए बुध्दि और हृदय का समन्वय करने का संदेश "भस्मांकुर" में दिया है ।

रुढि, अंधविश्वास एवं पाखंडी बर्ताव नागार्जुन को बेचैन करता है । समाज में अनमेल विवाह जैसी कुँछ रुढियाँ प्रचलित है, जो समाज को रुढिग्रस्त बनाती हैं । नागार्जुन ने शिव को पाखंडी साधु के रुप में चित्रित करके आज के नकली साधु-फकिरों को बेनकाब करने की कोशिश की हैं । आज की जनता को जागृत करके इन पांखडियों के पाखंड से बचाने का निरंतर प्रयास "भस्मांकुर" में किया है ।

नागार्जुन को सहयोग की भावना में अटूट विश्वास है । भारत देश में एकता प्रस्थापित करने के लिए उन्होंने मिल-जुलकर रहने का एवं एक-दूसरे को सहयोग करने का संदेश दिया है । वसंत को दोस्त के रुप अभिव्यक्त करके प्रेम एवं बंधुत्व का संदेश दिया है ।

प्रगतिवादी कवियों ने मालिकशाही, अन्याय, अत्याचार का चित्रण अधिकांश सभी कविताओं में किया है । नागार्जुन मनुष्य की दृष्टि से देखने के पक्षपाती है । उन्होंने "भस्मांकुर" में कामदेव को नौकर के रुप में और इंद्रदेव को मालिक के रुप में चित्रित करके उन पात्रों के माध्यम से मालिक और नौकर के बीच के संबंध को स्पष्ट किया है । स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य के साथ खिलवाड करनेवाले शोषक वर्ग को विरोध करके शोषितों के प्रति विशेष सहानुभूति प्रकट की हैं । नागार्जुन ने मालिकशाही की विकृति को निकट से देखा है और अनुभव किया है । इसीलिए उन्होंने जन-सामान्य

को सावधान करके इस विकृति को जड से उखाड फेंकने की सलाह दी हैं ।

आशा जीवन जीने के लिए प्रेरित करती हैं । नागार्जुन का आशावादी दृष्टिकोन बडा ही प्रबल है । 'भस्मांकुर' में आशावादी बनने का संदेश देकर मंगल जीवन की कामना की हैं ।

निष्कर्षता हम कह सकते हैं कि नागार्जुनजी मूलतः मानवतावादी साहित्यकार है । उन्होंने मानव-जाति को सुखी बनाने का निरंतर प्रयास किया है । 'भस्मांकुर' का समग्र अध्ययन करने पर हम कह सकते हैं कि 'भस्मांकुर' आकार की दृष्टि से लघु है, लेकिन उद्देश्य की व्यापकता विशाल है । 'भस्मांकुर' जीवन के शाश्वत मूल्यों का प्रतिपादन करके व्यापक जीवन की अभिव्यक्ति करता है । नागार्जुनजी का यही प्रयास राष्ट्र और समाज का नव निर्माण कर सकता है । इस दृष्टि से "भस्मांकुर" हिंदी काव्य की एक अमर कृति सिध्द होती हैं ।

********** xxx **********

xxx परिशिष्ट xxx

- संदर्भ - साहित्य - सूची -

क्र	नागार्जुन की कृतियाँ पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन काल / संस्करण
1.	तुमने कहा था	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1980
2.	खिचडी विप्लव देखा हमने	संभावना प्रकाशन, हापुड	प्रथम संस्करण, 1980
3.	हजार-हजार बाहोंवाली	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1981
4.	प्यासी पथराई आँखे	अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण, 1982
5.	पुरानी जूतियों का कोरस	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1983
6.	भस्मांकुर	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली	बारहवाँ संस्करण, 1990
7.	युगधारा	यात्री प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1956
8.	सतरंगे पंखोंवाली	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1959
9.	तालाब की मछलियाँ	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1974
10.	ऐसे भी हम क्या । ऐसे भी तुम क्या ।	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1985
11.	आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1986

आ	सहाय्यक–संदर्भ–ग्रंथ सूची ग्रंथ का नाम	लेखक / प्रकाशक /	प्रकाशन	संस्करण, सन
1.	नागार्जुन	सत्यनारायण	रचना प्रकाशन, जयपुर	प्रथम संस्करण, 1991
2.	नागार्जुन : जीवन और साहित्य	डॉ. प्रकाशचंद्र भट्ट	सेवासदन प्रकाशन, रामपुर	प्रथम संस्करण, 1974
3.	नागार्जुन का कथा साहित्य	तेजसिंह	पराग प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1993
4.	नागार्जुन की काव्ययात्रा (एक विश्लेषण)	डॉ. रतन	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी	प्रथम संस्करण, 1986
5.	नागार्जुन और उनका रचना–संसार	विजयबहादुर सिंह	संभावना प्रकाशन, हापुड	प्रथम संस्करण, 1982
6.	नागार्जुन की कविता	अजय तिवारी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1990
7.	हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि	डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा	चतुर्थ संस्करण, 1977
8.	नये कवि : एक अध्ययन	डॉ. संतोषकुमार तिवारी	भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली	1961
9.	हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि	मुरारिलाल शर्मा "सुरस"	दिनमान प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1986
10.	हिंदी के प्रमुख कवि : रचना और शिल्प	डॉ. अरविंद पाण्डेय	अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर–कानपुर	प्रथम संस्करण, 1986
11.	आधुनिक हिंदी काव्य और कवि	सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी	नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण, 1962
12.	नई रचना और रचनाकार	डॉ. दयानंद शर्मा	अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेतनगर, कानपुर	प्रथम संस्करण, 1990
13.	प्रतिनिधि कवि	सं. नामवर सिंह	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1983
14.	नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर	डॉ. संतोषकुमार तिवारी	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा	प्रथम संस्करण, 1980
15.	हिंदी की मार्क्सवादी कविता	डॉ. संपत ठाकुर	प्रगति प्रकाशन, आगरा	1978
16.	मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य	डॉ. कमलाकांत पाठक	रणजित प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, दिल्ली	1960

17.	आधुनिक हिंदी खंडकाव्य	डॉ.एस. तंकमणि अम्मा	सूर्य प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1987
18.	साहित्यिक निबंध	राजनाथ शर्मा	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा	त्रयोदश संस्करण, 1971
19.	काव्यांग परिचय	डॉ.प्रेमनारायण टंडन	हिंदी साहित्य भंडार, अमिनाबाद, लखनऊ	पाँचवा संस्करण, 1965
20.	काव्य रुपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास	डॉ.शकुंतला दुबे	हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी–1	प्रथम संस्करण, 1964
21.	साहित्यालोचन	राजकिशोर सिंह	प्रकाशन क्रेंद्र, न्यू बिल्डींग, अमिनाबाद, लखनऊ	
22.	वाड्मय विमर्श	आ.विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	पूर्णा प्रकाशन, कल्याण प्रेस, वाराणसी	प्रथम संस्करण, सं.2014 वि
23.	काव्य के रुप	बाबू गुलाबराय	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली	द्वितीय संस्करण, 1950
24.	काव्यशास्त्र	डॉ.भगीरथ मिश्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी	प्रथम संस्करण, 1972
25.	आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना	डॉ.वासुदेव नंदन प्रसाद	भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स) पटना	तेरहवाँ संस्करण, 1977
26.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत	राजकिशोरसिंह एवं डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र	प्रकाशन केंद्र, लखनऊ	प्रथम संस्करण, 1992
27.	हिंदी साहित्य पर संस्कृत का प्रभाव	डॉ.सरनामसिंह शर्मा	रामनारायणलाल बेनीमाधव, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण, 1952
28.	हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास	डॉ.भगीरथ मिश्र	लखनऊ विश्यविद्यालय, लखनऊ	प्रथम संस्करण, 2015 वि.
29.	हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डॉ.रामकुमार वर्मा	रामनारायणलाल बेनीमाधव, इलाहाबाद	षष्ट संस्करण, 1971
30.	आधुनिक काव्यकला और दर्शन	डॉ.राममूर्ती त्रिपाठी	साहित्य–सदन, इलाहाबाद	1973
31.	शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – भाग–1	डॉ.गोविंद त्रिगुणायत	भारती साहित्य मंदिर, फव्वारा–दिल्ली	द्वितीय संस्करण, 1970
32.	शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत – भाग–2	डॉ.गोविंद त्रिगुणायत	एस.चंद ॲण्ड कंपनी, रामनगर, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1968
33.	अरस्तु का काव्यशास्त्र	डॉ.नगेंद्र और महेंद्र चतुर्वेदी	इलाहाबाद	सं.2014

34.	काव्यदर्पन	विद्यावाचस्पति रामदहिन मिश्र	गंथमाला, पटना	1960
35.	रस-अलंकार-पिंगल	डॉ. शंभुनाथ पाण्डेय	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा	अठारहवाँ संस्करण, 1994
36.	रस सिध्दांत	डॉ. नगेंद्र	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1987
37.	आधुनिक हिंदी समीक्षा की प्रवृत्तियाँ	डॉ. विद्या चौहान	संचयन, 152 सी गोविंदनगर, कानपुर-6	प्रथम संस्करण, 1987
38.	हिंदी साहित्य कोश	सं. डॉ. धीरेंद्र वर्मा	ज्ञानमंडल, वाराणसी	1963
39.	नयी कविता की प्रबंध चेतना	सं. डॉ. महावीर सिंह चौहान	गिरनार प्रकाशन, पिलाजी गंज, महेसाना, उ. गुजरात	1981
40.	आधुनिक हिंदी कविता : सिध्दांत और समीक्षा	डॉ. विश्वनाथ उपाध्याय	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1962
41.	आधुनिक हिंदी काव्य	डॉ. राजेंद्रप्रसाद मिश्र	ग्रंथम, रामबाग, कानपुर	प्रथम संस्करण, 1968
42.	मिथक और आधुनिक कविता	डॉ. शंभुनाथ	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1985
43.	आधुनिक खंडकाव्यों में युगचेतना	डॉ. एन. डी. पाटील	अतुल प्रकाशन, कानपुर	प्रथम संस्करण, 1994

सहाय्यक^संस्कृत ग्रंथ-सूची –

1.	काव्यादर्श	दंडी, व्याख्याकार-टी रणवीरसिंह	हिंदी अनुसंधान परिषद, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1959
2.	काव्यालंकार (हिंदी अनुवाद)	रुद्रट	चोखंबा विद्याभवन, वाराणसी	प्रथम संस्करण, सं. 203
3.	साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज प्रणीत	निर्णय सागर प्रेस, कोलमाट लेन, बॉम्बे	तृतीय संस्करण, 1915
4.	रस गंगाधर	महाकवि जगन्नाथ	काव्यमाला ग्रंथावली, 12 निर्णयसागर प्रेस, मुंबई	प्रथम संस्करण, सं. 1988

सहाय्यक-अंग्रेजी ग्रंथ-सूची –

1.	An Introduction to the study of Litereture	W.H. Hudson	U.S.A.	1921
2.	Varieties of Poetica	Encyclopedia of Brittanica		1950